जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 11 नवंबर 2020

जामिया ने मनाया राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती के अवसर पर जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने आज राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया। उनके शिक्षा मंत्री रहते देश में पहला आईआईटी, आईआईएससी, स्कूल ऑफ़ प्लानिंग एंड एग्रीकल्चर और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना हुई थी। इस योगदान के सम्मान में उनके जन्म दिवस को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जामिया के एजुकेशन स्टडीज़ विभाग ने मौलाना आज़ाद के योगदान पर ऑनलाइन पैनल चर्चा का आयोजन किया। इसमें विभाग के सभी प्रोग्राम के अध्यापकों और छात्रों ने इसमें हिस्सा लिया।

इस विभाग के प्रमुख प्रो एजाज़ मसीह ने कहा कि मौलाना आज़ाद न सिर्फ एक बेहतरीन वक्ता थे, बल्कि एक महान विचारक और विद्वान भी थे। वह हिंदू-मुस्लिम एकता के बड़े समर्थक थे और वह राष्ट्र को धर्म से ऊपर मानते थे।

जामिया के उर्दू विभाग के एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ खालिद मुबश्शिर ने, पैनल चर्चा के मुख्य अतिथि के तौर पर मौलाना आज़ाद के योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मौलाना आज़ाद चाहते थे कि अल्पसंख्यक समुदायों के बीच असुरक्षा की भावना दूर की जाए। वह साझा संस्कृति के प्रबल समर्थक थे और आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाना चाहते थे। वह प्रेस की आज़ादी में यक़ीन रखते थे और मानते थे कि शिक्षा को रोज़ी कमाने की तुलना में व्यक्तित्व विकास पर ज़्याद ध्यान देना चाहिए।

एजुकेशनल स्टडीज़ विभाग के सहायक प्रोफेसर, डॉ एम जावेद हुसैन ने मौलाना आज़ाद के शैक्षिक विचारों और स्वतंत्र भारत में शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली विकसित करने में उनके योगदान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि एक धार्मिक परिवार और धर्मशास्त्र में प्रशिक्षित होने के बावजूद, मौलाना आज़ाद अपने शैक्षिक विचारों को लेकर बहुत ही

उदार थे। वह परंपरा और आधुनिकता के सर्वश्रेष्ठ संवाद का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने आज़ाद के उस पांच सूत्रीय कार्यक्रम का भी ज़िक्र कया जिसमें मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, वयस्कों की सामाजिक शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक और उच्च शिक्षा सुविधाओं का विस्तार करना, तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा पर खास जोर देना और समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाना शामिल है। उन्होंने धर्म और शिक्षा, संस्कृति और शिक्षा, परंपरा और आधुनिकता में सामंजस्य बनाने के बारे में मौलाना आज़ाद के विचारों को भी समझाया।

इसी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ सज्जाद अहमद ने मौलाना आज़ाद के दार्शनिक विचारों और मदरसों का आधुनिकीकरण करने की प्रक्रिया शुरू करने के उनके प्रयासों के बारे में बताया।

डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़ की ही प्रोफ़ेसर हरजीत कौर भाटिया ने मौलाना आज़ाद के योगदान पर एक वीडियो दिखाया।

इसी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ हरप्रीत कौर जस ने मौलाना के संसद में दिए गए कुछ भाषणों को पेश करते हुए छात्रों से कहा कि उन्हें देश के पहले शिक्षा मंत्री के उदार विचारों से परिचित होना चाहिए।

एजुकेशनल स्टडीज़ विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ अरशद इकराम अहमद ने चर्चा का संचालन किया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक